दर्शनशास्त्र का इतिहास
70 हुसरल और हाइडेगर
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

मैं ज्ञान और सच्चाई के बारे में नीत्शे के नज़रिए की बात कर रहा हूँ और यह देख रहा हूँ कि कैसे वह अलग-अलग नज़रियों के बीच प्लूरलिज़्म को बस अलग-अलग अंदरूनी इमोशनल टेंडेंसी का एक एक्सटेंशन मानते हैं, जो आखिरकार अलग-अलग हद तक पावर की इच्छा तक कम हो जाती है, और यह नीत्शे का नज़रिया ही है जो आज के पोस्ट-मॉडर्निज़्म और उस मामले में हमारे समय के प्लूरलिज़्म को बनाने वाले बड़े असर में से एक है। और जब हम फेनोमेनोलॉजी और खासकर हुसरल से कुछ जान-पहचान बढ़ाने की कोशिश कर रहे थे, तो हम देख रहे थे कि उनकी चिंता ठीक यही है कि साइंस, मैथ, लॉजिक और किसी भी दूसरे तरह के इंसानी ज्ञान के लिए कोई मज़बूत नींव नहीं है। और वह इसका दोष नेचुरलिज़्म और नेचुरलिस्टिक फिलॉसफी पर डालते हैं, जो इंसानी ज्ञान को पूरी तरह से, पूरी तरह से नेचुरल प्रोसेस के तौर पर समझाने की कोशिश करते हैं।

तो आपको हिस्टोरिकल एक्सप्लेनेशन मिलते हैं, आपको साइकोलॉजिकल एक्सप्लेनेशन मिलते हैं, वह वहाँ हिस्टोरिज़्म और साइकोलॉजिज़्म की बात करते हैं , और बेशक नीत्शे साइकोलॉजिज़्म का एक बेहतरीन उदाहरण होगा , जो लोगों द्वारा किए जाने वाले ज्ञान के दावों का एक साइकोलॉजिकल एक्सप्लेनेशन है। उनके समय की दूसरी आदतों में से एक, जिसकी वह आलोचना कर रहे हैं, वह एक नियो-कैंटियन फिलॉसफर का काम है, जिसका हमने उस समय ज़िक्र किया था, मुझे लगता है, विल्हेम डिल्थे, जो फिलॉसॉफिकल दुनिया के नज़रिए में दिलचस्पी रखते थे और दुनिया के नज़रिए को तीन तरह से बांटते थे, जिनमें से हर एक को उन्होंने ह्यूमन साइकोलॉजी के किसी न किसी पहलू से जोड़ा था। तो आपको, अगर आप चाहें, तो रैशनल माइंड मिलता है, आपको वैल्यू-ओरिएंटेड माइंड मिलता है, आपको एंपिरिकल रूप से चिंतित व्यक्ति मिलता है, असल में, वे तीन चीजें जिन्हें जैस्पर्स एक साथ लाने की कोशिश कर रहे थे, यह समझने के लिए कि पूरा असली इंसानी अस्तित्व क्या है।

खैर, हुसरल जो करते हैं, वह इसमें एक और तरह का नेचुरलिस्टिक एक्सप्लेनेशन देखना है, जिसमें, जबकि वह दुनिया को देखने के नज़रिए को इंसानी आत्मा में बेस कर रहे हैं, यह असल में इंसानी आत्मा में है जिसे बस कुछ साइकोलॉजिकल टाइप के हिसाब से समझा जाता है, और अगर ऐसा है तो आप रिलेटिविज़्म को कैसे पार करेंगे । दूसरे शब्दों में, हुसरल सिर्फ़ नए फ़ाउंडेशनलिज़्म की नई नींव नहीं चाहते, बल्कि एक यूनिवर्सल नींव चाहते हैं, कुछ ऐसा जो सिर्फ़ अलग-अलग साइकोलॉजिकल टाइप के कारण होने वाले अंतरों का हिसाब न हो, जैसा कि नीत्शे और डिल्थी में है, बल्कि यह इंसानी आत्मा के यूनिवर्सल स्ट्रक्चर के बारे में कुछ है, जिसकी वजह से एक यूनिवर्सल नींव है। वह यही चाहते हैं।

अब, इसी संदर्भ में उनकी एक शिकायत यह है कि सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट का फर्क, जो डेसकार्टेस के समय से सोच पर हावी रहा है, जो हमारी सोच में सभी सब्जेक्टिव असर से ऑब्जेक्ट को अलग करने की मांग करता है, वह सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट का फर्क असल में बहुत बनावटी है।

आखिर, अगर आप कह रहे हैं, मुझे कुछ पता है, तो आप शायद ही यह समझ पा रहे हैं कि ज्ञान क्या है अगर आप सिर्फ ऑब्जेक्ट को दिखाते हैं। 'मुझे पता है' सब्जेक्ट का एक काम है, और यह उस इंसानी सब्जेक्टहुड का नुकसान है, इंसानी आत्मा की सही समझ का नुकसान है, जो नेचुरलिस्टिक फिलॉसफी की दिक्कत है और इसलिए नेचुरलिज्म की नाकामी का कारण है।

तो हुसरल जो चाहते हैं, अगर आप चाहें, और वह इसे यही कहते हैं, इंसानी आत्मा का विज्ञान, या इंसानी चेतना का विज्ञान, 'मैं' का विज्ञान। अब, बेशक यह वैसी ही चीज़ है जिसकी कोशिश डेसकार्टेस ने की थी, कम से कम डेसकार्टेस ने वहीं से शुरुआत की थी, लेकिन जब हुसरल डेसकार्टेस पर वापस जाते हैं, यानी यूनिवर्सल संदेह की शुरुआत तक, जिससे कॉगिटो निकलता है, मुझे लगता है, हुसरल के मकसद के लिए, डेसकार्टेस अपने सस्पेंडेड जजमेंट में उतने रेडिकल नहीं थे। उन्होंने हर उस चीज़ पर जजमेंट सस्पेंड कर दिया जिस पर शक हो सकता था, लेकिन तुरंत 'मैं सोचता हूँ' से इस बात पर आ गए कि वह एक सोचने वाली चीज़ हैं। पहचान की उस बहुत छोटी सी झलक के साथ, वह इंसानी विषय को पूरी तरह से छोड़ देते हैं और असल में यह नहीं देखते कि इंसानी चेतना के बारे में यूनिवर्सल क्या है, 'मैं जानता हूँ' में 'मैं'।

दूसरी तरफ, इमैनुअल कांट, यह पूछते हुए कि वह क्या है जो हमारे अनुभव, हमारे ज्ञान, इंसानी चेतना की पूरी रेंज को ऑर्डर करता है और एक करता है, ट्रांसेंडेंटल सेल्फ के बारे में बात करते हैं, और हमारी समझ की एक सिंथेटिक यूनिटी की बात करते हैं, आपको याद होगा। अब, हुसरल को वह दिशा मिल गई है जिस पर वह जाना चाहते हैं। जिसे कांट ने ट्रांसेंडेंटल ईगो, ट्रांसेंडेंटल सेल्फ, ट्रांसेंडेंटल सेल्फ कहा, कांट, प्योर रीज़न की आलोचना के रैशनल साइकोलॉजी सेक्शन में, चर्चा करते हैं, आपको याद है, आपने इसे पढ़ा, आपने इसकी आउटलाइन बनाई, डेसकार्टेस की 'मैं', 'सेल्फ' तक पहुंचने की कुछ कोशिशों पर चर्चा की, और तय किया कि उन मेटाफिजिकल अटकलों के पास बस सही आधार नहीं थे।

हुसरल डेसकार्टेस की नाकामी से निराश नहीं हैं। तो, हुसरल डेसकार्टेस की बुनियाद पर वापस जाने की कोशिश करते हैं और देखते हैं कि क्या वे उस शुरुआती पॉइंट से, ट्रांसेंडेंटल ईगो के यूनिवर्सल स्ट्रक्चर के बारे में कुछ बता सकते हैं। तो, यह हमें एक ज़्यादा रेडिकल शुरुआती पॉइंट की ज़रूरत पर लाता है।

मैं यह बताना चाहूंगा कि जब उन्हें सोरबोन में लेक्चर देने के लिए कहा गया, जहां हर किसी को डेसकार्टेस को श्रद्धांजलि देनी होती है । मेरा मतलब है, वह फ्रेंच फिलॉसफी के पैट्रन फिलॉसफर, पैट्रन सेंट हैं। उन्होंने जो किया वह कार्टेशियन मेडिटेशन के नाम से जाने जाने वाले लेक्चर देना था।

कार्टेशियन मेडिटेशन। असल में डेसकार्टेस से शुरू करते हुए, और डेसकार्टेस के हिसाब से उनके मेथड को समझाने की कोशिश करते हैं। खैर, तो वह जो करते हैं , वह उस फेनोमेनोलॉजिकल मेथड के दो पहलुओं के बारे में बात करते हैं जो वह चाहते हैं।

सबसे पहले , ब्रैकेटिंग, जिसका मतलब है बस फैसले को रोकना। कुछ ऐसा ही डेसकार्टेस ने सोचने और समझने की सभी चीज़ों के बारे में किया था। वह कभी-कभी 'एपार्ची' शब्द का इस्तेमाल करते हैं।

ग्रीक स्केप्टिक्स ने सस्पेंडेड जजमेंट के लिए यही शब्द इस्तेमाल किया था। तो, ब्रैकेटिंग, जजमेंट का सस्पेंस, एपार्ची। डेसकार्टेस ने अपनी मेथडोलॉजी के हिस्से के तौर पर जिस भी चीज़ पर शक किया जा सकता था, उसके साथ ऐसा किया।

जब हुसरल चीज़ों को ब्रैकेट में रखते हैं, तो वे उनके होने पर शक नहीं करते। वे कभी उनके होने पर सवाल नहीं उठाते। उनकी चिंता यह है कि हमें उनकी चीज़ों के बारे में ज़्यादा अच्छी जानकारी क्यों नहीं है।

यही उनकी चिंता है। ज्ञान की नींव। इसलिए, ज्ञान की चीज़ों को ब्रैकेट में रखते हुए, वह ज्ञान के खास हिस्सों के बीच वेरिएबल्स को ब्रैकेट में रख रहे हैं।

खास तरह का ज्ञान। असल में, वह कभी-कभी ज्ञान से कहीं ज़्यादा चेतना पर ज़ोर देते हैं, और चेतना की सभी चीज़ों को एक साथ रखते हैं। हर तरह की चेतना, सिर्फ़ किसी साफ़ समझ की चेतना नहीं।

चेतना की सभी अवस्थाएँ। और वह चेतना के उस यूनिवर्सल स्ट्रक्चर को समझने की कोशिश करता है। सभी खास बातें, सभी थ्योरी, सभी मतलब ब्रैकेट में हैं।

मैं यह भी कहना चाहूंगा कि अपने काम की शुरुआत में, उन्होंने पूरी तरह से थ्योरेटिकल नज़रिया बनाए रखने की कोशिश की। यानी, इंसानी ज्ञान की बात करते समय प्रैक्टिकल लोगों की तरह इंसानी अस्तित्व के किसी भी प्रैक्टिकल पहलू को शामिल नहीं किया। लेकिन, अपने काम के बाद के स्टेज में, उन्होंने उस थ्योरेटिकल नज़रिए को भी ब्रैकेट में रखने की बात की, जो एक तरह की आर्टिफिशियल चीज़ है।

यह मानते हुए कि जब मैं कहता हूँ कि मैं कुछ जानता हूँ, तो आप देखते हैं कि जो मैं जानता हूँ वह मेरे पूरे नज़रिए का हिस्सा है। जिस तरह से मैं जीता हूँ। मैं जो जानता हूँ, जिस तरह से जानता हूँ, वह मेरे लेबेन्सवेल्ट का एक हिस्सा है।

मेरी जीती हुई दुनिया। और वह जो करना चाहता है, वह जीती हुई दुनिया के 'मैं' तक पहुँचना है, न कि दुनिया के किसी गूढ़ थ्योरेटिकल ज्ञान के 'मैं' तक। इसलिए मुझे प्री-साइंटिफिक चेतना के बारे में पता है।

मैं एक प्री -थ्योरेटिकल चेतना के बारे में जानता हूँ । यानी, मैं आम ज़िंदगी के बारे में जानता हूँ । वह यही कहना चाहता है।

अब, उनके इस बाद वाले कदम ने उनके स्टूडेंट्स को एक फेनोमेनोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन करने की कोशिश करने के लिए प्रेरित किया, सिर्फ़ 'मैं जानता हूँ' का नहीं, बल्कि जीवन की दुनिया में

'मैं' की पूरी एक्टिविटी का। और यही चीज़ आपको हाइडेगर जैसे एग्ज़िस्टेंशियल फेनोमेनोलॉजिस्ट में मिलती है। तो आप देख सकते हैं कि वे हुसरल से ठीक उसी पॉइंट पर निकले थे जहाँ थ्योरेटिकल साइंटिफिक नज़रिए को ब्रैकेट में रखा गया था और उस 'मैं' को पाने की कोशिश की गई थी जो दुनिया में प्री-थ्योरेटिकल, नॉन-थ्योरेटिकल बेसिस पर मौजूद है ।

इसे दूसरे तरीके से कहें। इस सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट के फर्क पर वापस आते हैं। नेचुरलिस्ट हुसरल के मतलब में सब्जेक्टिविटी को नज़रअंदाज़ करता है और सिर्फ़ ऑब्जेक्ट पर फोकस करता है, और इस बात का ऑब्जेक्टिव साइंटिफिक ब्यौरा देता है कि वह ज्ञान कैसे मुमकिन है।

दूसरी तरफ, ऑब्जेक्ट को अलग करके सिर्फ़ सब्जेक्ट पर किसी तरह से खुद को समझने की कोशिश करना एक गलती होगी। क्योंकि ज़िंदगी की दुनिया में, असल में, ज्ञान के ऑब्जेक्ट के बिना 'मैं जानता हूँ' जैसी कोई चीज़ नहीं है। तो आप जो स्टडी करने की कोशिश कर रहे हैं, वह असल में सब्जेक्ट नहीं है, ऑब्जेक्ट नहीं है, उस मतलब में जैसा डेसकार्टेस ने कहा था, वह सोचने वाली चीज़ है, वह एक बड़ी चीज़ है।

नहीं, आप जो स्टडी करने की कोशिश कर रहे हैं वह हाइफ़न है। हाँ, इन दोनों के बीच क्या रिश्ता है जिसकी वजह से हमें नॉलेज है? क्योंकि 'मैं कुछ जानता हूँ, पता है' हाइफ़न है। आप समझे? तो कॉन्शसनेस का वह यूनिवर्सल स्ट्रक्चर क्या है जिसका नॉलेज एक फ़िनॉमिना है? आप समझे, यही सवाल है।

खैर, यही बात एग्ज़िस्टेंशियलिस्ट में भी साफ़ हो जाती है जब हाइडेगर कहते हैं कि हमारा होना, डिज़ाइन, असल में वहाँ होना, आप देखिए, यह कोई प्राइवेट, अकेला होना, मेरा होना नहीं है। यह दुनिया में एक होना है, आप देखिए। और यही बात सार्त्र की जानी-मानी बात में भी सच है कि हमें एक ऐसी दुनिया में डाला गया है जिसे हमने खुद नहीं बनाया है।

दुनिया में एक चीज़ है, यही इंसान के होने का नेचर है, वो अंदर होना , दुनिया में होना। तो डेसकार्टेस की गलती सिर्फ़ ये नहीं थी कि वो अपने शक में, अपनी ब्रैकेटिंग में काफ़ी रेडिकल नहीं थे, काफ़ी पीछे नहीं गए, बल्कि ये भी थी कि उन्होंने 'मैं' को एक अलग 'मैं' के तौर पर सोचा। कहने का मतलब है, मैं एक 'मैं' हूँ जहाँ दुनिया हो या न हो, आप देखिए। और उन्हें मेडिटेशन 6 तक पता नहीं था कि कोई असली दुनिया है। इतने समय तक, वो शायद सिर्फ़ एक 'मैं' पर काम कर रहे थे। खैर, मेडिटेशन 3, ये भगवान और मैं हैं, आप देखिए।

लेकिन असल में मेडिटेशन 6 तक उनके पास दूसरे सीमित सेल्फ़ पर बहस करने का कोई आधार नहीं है। आपके पास एक शरीर है, और इसलिए मेरे मन-शरीर के रिश्ते और आपके मन-शरीर के रिश्ते के हिसाब से कुछ मिलती-जुलती बातें हैं। खैर, यह एक बहुत ही बनावटी तरह का नियम है। और हुसरल जो चाहते हैं, वह है 'मैं' को वैसा समझना जैसा वह असल में है।

डेसकार्टेस के थ्योरेटिकल नज़रिए को अलग रखना होगा । आप 'I' को उसके ठोस रिश्तों से अलग नहीं कर सकते। तो फिर, हम हाइफ़न के बारे में क्या कहेंगे? हाइफ़न जैसी एक छोटी सी चीज़।

और मुख्य बात जिस पर हुसरल ज़ोर देते हैं, और इसे अक्सर उनकी महान खोज माना जाता है, वह है चेतना की इंटेंशनैलिटी। चेतना की इंटेंशनैलिटी। अब, इंटेंशनैलिटी शब्द को ध्यान में रखें जैसा कि इसे मध्ययुगीन काल के आखिर में इस्तेमाल किया गया था ।

इसका संबंध उस सचेत बाहरी संदर्भ से है जो मन किसी चीज़ को जानने में रखता है। समझ, ज्ञान और चेतना की दूसरी अवस्थाएँ टेलियोलॉजिकल काम हैं। काम किसी चीज़ की ओर होते हैं।

अब, डेसकार्टेस हमें चेतना की इमेज सिर्फ़ मन के अंदर विचारों को एंटरटेन करने वाली चीज़ के तौर पर देते हैं। और यह नज़रिया इस बात को पूरी तरह खुला छोड़ देता है कि क्या विचार किसी चीज़ के बारे में हैं। जबकि हुसरल जो कह रहे हैं, वह यूनिवर्सल फ़ीचर्स में से एक है, इंसानी चेतना के असली सार का हिस्सा है, कि यह हमेशा चेतना में रहती है।

चेतना, एक विचार, यह जानना। यह हमेशा उसी से जुड़ा होता है। यह दिशा-निर्देश वाला है।

और यह बात याददाश्त में भी सच है। आप पीछे की बात कर रहे हैं , अंदाज़ा लगा रहे हैं, भविष्य की बात कर रहे हैं। क्लास के किसी गैर-मौजूद सदस्य के बारे में सोच रहे हैं, उसका ज़िक्र कर रहे हैं।

ऐसा हमेशा होता है। कभी-कभी यह एक रिफ्लेक्सिव एक्ट होता है। उस विचार पर सोचना , आप देखिए।

लेकिन चेतना के काम का यही नेचर है। यह कोई पैसिव चीज़ नहीं है, जैसा लॉक ने पैसिव तरीके से विचारों को पाने के बारे में बताया था, टैबुला रासा। लेकिन यह एक एक्टिव चीज़ है।

और यह कांट का उनका कर्ज़ है, आप देखिए। कांट ने सेल्फ़, कॉन्शियस सेल्फ़ का आइडिया एक एक्टिव जानने वाले के तौर पर पेश किया जो असल में अनुभव के ऐसे रूपों में योगदान देता है जो उसे समय और जगह के हिसाब से एक करते हैं। और फिर कैटेगरीज़ जो अनुभव से परे समझ को एक करती हैं।

अब, हुसरल इसी बात की बात कर रहे हैं, चेतना का वह काम जो कुछ करता है। यह क्या करता है? और यहाँ जिस भाषा का इस्तेमाल यह बताने के लिए किया गया है कि इंटेंशनैलिटी क्या करती है, वह कई तरह की होती है। सबसे पहले, यह चीज़ को मेरे सामने पेश करती है।

आप देखिए, चीज़ मेरे सामने बिना किसी वजह के नहीं आती, दरवाज़ा खोलकर। लेकिन मैं, जैसे कि, ध्यान देकर, वहाँ का रेफरेंस समझता हूँ, किसी चीज़ पर ध्यान देकर, उस पर अपना दिमाग लगाकर, देखता हूँ कि हम क्या कह रहे हैं? उस पर अपना दिमाग लगाकर, ध्यान देकर, और देखकर। मैं जो करता हूँ वह है चीज़ को मौजूद करना।

मैं ऑब्जेक्ट को अंदर लाता हूँ । इसे कभी-कभी एक कॉन्स्टिट्यूटिव एक्ट कहा जाता है। हाँ, क्योंकि जानने के एक्ट में, मैं ऑब्जेक्ट को एक ऑब्जेक्ट, जानने का ऑब्जेक्ट बनाता हूँ।

सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट के रिश्ते के हिसाब से, सब्जेक्ट के बिना कोई ऑब्जेक्ट नहीं होता। अगर यह किसी सब्जेक्ट के लिए ऑब्जेक्ट नहीं है तो यह ऑब्जेक्ट कैसे हो सकता है? ठीक वैसे ही जैसे ऑब्जेक्ट के बिना कोई सब्जेक्ट नहीं होता। अगर कोई सब्जेक्ट ही नहीं है जिसके पास कोई ऑब्जेक्ट हो तो यह सब्जेक्ट कैसे हो सकता है? और इसलिए, यह जो करता है वह ऑब्जेक्ट बनाता है, मेरे लिए वह ऑब्जेक्ट जो यह है, आप देखिए।

अब, यह लगभग कांटियन है। जानने के काम में, चीज़ अपने आप में मेरे लिए एक चीज़ बन जाती है। जानने में, मैंने अपने लिए एक चीज़ बनाई, आप देखिए।

कॉन्स्टिट्यूटिव के अलावा , यह एक कंस्ट्रक्टिव काम है। जैसे कांट के लिए, यह टाइम फ़ॉर्म है जो समझ को स्कीमेटाइज़ करता है। तो, मेरे जानने का नेचर ही, आप देखिए, पूरी सिचुएशन बनाता है, मेरे लिए उसे एक साथ लाता है।

लिए यह सिर्फ़ एक अलग चीज़ नहीं है, बल्कि पूरा सीन आपस में जुड़ा हुआ है । इस मायने में, सारा ज्ञान खुद से जुड़ा होता है। यह ऐसा है, जैसे मैं यहाँ खड़ा हूँ, मुझे कोई और नहीं दिख रहा, क्योंकि जहाँ मैं खड़ा हूँ, वहाँ से मैं अपने साथ जुड़े इन रिश्तों में यह सब देखता हूँ।

जबकि, आपके नज़रिए से, यह अलग हो सकता है, लेकिन यह कंस्ट्रक्टिव है। इसी तरह, यह एक मतलब देने वाला काम है। यह एक मतलब देने वाला काम है।

मुझे लगता है कि यह बात हुसरल ने उतनी नहीं कही, जितनी बाद के कुछ लेखकों ने कही। यहाँ बुनियादी सोच यह है कि जानने का काम चाहे कुछ भी करे, उसे अपने लिए चीज़ के तौर पर देखकर, मैं उसे अपने लिए मतलब देता हूँ । और इस मायने में, मैं उसे मतलब देता हूँ।

कन्फ्यूजिंग बात यह है कि इंटेंशनैलिटी को कभी-कभी रेफरेंशियलिटी के साथ मतलब का काम कहा जाता है , सिर्फ इसलिए क्योंकि हमारा शब्द मतलब साफ़ नहीं है। क्योंकि अगर मेरा कोई मतलब है, तो जब मैं कहता हूँ तो मेरा क्या मतलब होता है, मेरा मतलब आप से है, लेकिन मैं आपकी ही बात कर रहा हूँ, मैं जो कह रहा हूँ उसमें आपका ही मतलब है। तो मतलब का एक मतलब रेफरेंशियलिटी, इंटेंशनैलिटी से जुड़ा है।

मतलब का दूसरा मतलब है, हाँ, किसी ऐसी चीज़ को मतलब देना जो बेमतलब है, या उसे एक खास मतलब देना जो मेरे लिए होगा। तो, ज़्यादा एग्ज़िस्टेंशियल फेनोमेनोलॉजी में, आपको मतलब देने का विचार मिलता है। किसी भी हाल में, यह चीज़ों को ऑर्डर करने , दुनिया को ऑर्डर करने का विचार है ।

हाँ, चेतना पैसिव नहीं है, बल्कि एक्टिव है। चेतना रिप्रेजेंटेटिव नहीं है, जो बाहर जो है उसकी मेंटल तस्वीरें लेकर चलती है। यह रिप्रेजेंटेटिव नहीं है, यह कॉन्स्टिट्यूटिव है।

किसी चीज़ के बारे में मेरे जो आइडिया हैं, वे मेरे लिए उसे वैसा ही बनाते हैं। यह सिर्फ़ रिप्रेजेंटेशनल, कॉपी थ्योरी नहीं है। तो, इंटेंशनैलिटी ही पूरी चीज़ की चाबी है।

अगर आप हुसरल के बारे में ज़्यादा पढ़ेंगे, तो आपको जल्द ही पता चलेगा कि उन्होंने अपनी ज़्यादातर एनर्जी इस तरीके को डेवलप करने में लगा दी और दूसरे लोगों को इसे इस्तेमाल करने दिया। यह शायद एक ओवर-जनरलाइज़ेशन हो। उदाहरण के लिए, वह टाइम कॉन्शसनेस की एक फेनोमेनोलॉजी करते हैं।

समय की चेतना। और समय कोई आम सोच की चीज़ नहीं है, यह महाद्वीप के बाद की कोई चीज़ नहीं है। क्योंकि अगर समय सभी चेतनाओं को जोड़ने वाला रूप है, तो यह वह रूप है जिसे आप अंदरूनी समझ से याद करते हैं।

लेकिन बाहरी सोच के बारे में हमारे विचार भी हमें अंदरूनी तौर पर पता होते हैं, और इसलिए वे भी टाइम-ऑर्गनाइज़्ड होते हैं। तो मेरे लिए पूरी दुनिया टाइम-ऑर्गनाइज़्ड है । खैर, वह वहां जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह उस टाइम कॉन्शसनेस की एक फेनोमेनोलॉजी करना है, जो असल में कांटियन तरह की चीज़ के दिल तक पहुंच रही है।

उनके पहले के काम, जैसे 'द फ़ाउंडेशन्स ऑफ़ मैथमेटिक्स' और 'लॉजिकल इन्वेस्टिगेशन्स', उस तरह की फेनोमेनोलॉजी करने की कोशिश हैं जो मैथमेटिक्स के 'सेल्फ' के यूनिवर्सल स्ट्रक्चर में नींव रखेगी। यानी, लॉजिक की। आप देखिए, लॉजिक की नींव।

असल में, कांट की इस छोटी सी किताब, हुसरल, फेनोमेनोलॉजी एंड द क्राइसिस ऑफ फिलॉसफी में उनके दो निबंध हैं। एक का नाम है फिलॉसफी एज़ रिगोरस साइंस। उनका कहना है कि कोई भी दूसरा साइंस रिगरस नहीं है क्योंकि उनमें से किसी का भी ऐसा कोई आधार नहीं है जो साइंटिफिक मेथड को वैलिडेट करे।

लॉजिक भी नहीं। मैथमेटिक्स भी नहीं। इसलिए वह एक ऐसी फिलॉसफी की मांग कर रहे हैं जो उन नींवों को बनाएगी।

दूसरे का नाम है, चलो देखते हैं, एक और पूरा टाइटल है, फिलॉसफी एज़ रिगोरस साइंस। चलो देखते हैं। मैंने इसे लिख लिया है।

मैंने इसे लिख लिया है। चलिए देखते हैं। हाँ, द क्राइसिस ऑफ़ यूरोपियन साइंस एंड ट्रांसेंडेंटल फेनोमेनोलॉजी।

अब आप देख सकते हैं कि वह क्या चाहता है। इस संकट का कोई पक्का आधार नहीं है। पूरी बात के रिलेटिवाइज़ होने का खतरा है।

और ट्रांसेंडेंटल फेनोमेनोलॉजी, हाँ, ट्रांसेंडेंटल सेल्फ की एक फेनोमेनोलॉजी, जो उस प्रोसेस को रोक देगी और सही नींव बनाएगी। तो यही हुसरल की सबसे बड़ी चिंता है। और इसने बहुत सारे लोगों को प्रेरित किया।

पूरी तरह से प्रेरित लोगों का पीछा करना । मुझे याद है, यह कब होगा? ओह, 1960 के दशक में, मुझे लगता है कि यह था। मैंने येल में सोसाइटी फॉर फेनोमेनोलॉजी एंड एग्जिस्टेंशियल फिलॉसफी की एक मीटिंग में हिस्सा लिया था।

और उस मीटिंग में, जब लोग मीटिंग की जगह की लॉबी में खड़े होते थे, तो लोग आपके पास आते थे, यह मानकर कि आप भी उनकी तरह सोचते हैं, और लगभग मसीहा जैसे अंदाज़ में उस प्रोजेक्ट के बारे में बड़बड़ाते थे जिसमें वे शामिल थे। पिछले साल से संख्या बढ़ी है। ऐसा लगता है कि हम आगे बढ़ रहे हैं।

उस तरह की चीज़। इसमें एक असली मसीहा वाली भावना थी, उस उत्साह को पकड़ना दिलचस्प था , जो लगभग एक धार्मिक उत्साह था। यह देखना दिलचस्प था।

अच्छा, हेगेल। कमेंट के लिए रुकिए। हेगेल।

हुसरल. कमेंट के लिए रुकें. सवाल.

ठीक है, आप देखेंगे कि स्टम्पफ इस बारे में काफी क्लियर हैं। वह हाइडेगर के बारे में भी अच्छे हैं , इसलिए उसका इस्तेमाल ज़रूर करें। अब, मैं अगला स्टेप हसरल से लेकर हाइडेगर तक ले चलता हूँ ।

और यहाँ हाइडेगर में, आपके पास ट्रांसेंडेंटल फेनोमेनोलॉजी, ट्रांसेंडेंटल सेल्फ की फेनोमेनोलॉजी नहीं है, बल्कि एग्ज़िस्टेंशियल फेनोमेनोलॉजी है। अस्तित्व की फेनोमेनोलॉजी। हाइडेगर अब एक नए तरह के फाउंडेशनलिज़्म को स्थापित करने के बारे में चिंतित नहीं हैं।

यह उनका प्रोजेक्ट नहीं है। हुसरल के साथ समस्या यह है कि ब्रैकेटिंग का प्रोसेस कभी पूरा नहीं होता। इसलिए आप ट्रांसेंडेंटल सेल्फ को इस, उस, या ज्ञान की दूसरी तरह की चीज़ के सबूत से अलग नहीं कर सकते।

और इसे ऐसे पकड़ो जैसे यह बिना किसी सच्चाई के हो। यह ऐसा है जैसे हाइडेगर हुसरल से वही कह रहे हैं जो ह्यूम ने डेसकार्टेस से कहा था, या लॉक से, जिन्होंने एक ठोस आत्मा की सोच के बारे में बात की थी, यहाँ तक कि सेंसेशन और रिफ्लेक्शन और बाकी सभी चीज़ों के ऊपर भी जिनके बारे में हमें तुरंत पता चलता है। जिस पर ह्यूम ने जवाब दिया, मैं कभी भी खुद को बिना किसी आइडिया के नहीं पाता।

खैर, ऐसा लगता है जैसे हाइडेगर हुसरल से भी यही कह रहे हैं। आप कभी भी ऑब्जेक्ट के बिना हाइफ़न नहीं पकड़ पाते। आप कभी भी ऑब्जेक्ट के बिना, बिना कपड़ों के, जानबूझकर की गई स्थिति को नहीं पकड़ पाते।

और इसलिए उन्हें हाइडेगर के इस पॉजिटिव सोच से अलग होना होगा कि कोई पक्का फाउंडेशन, नया फाउंडेशनलिज्म बनाने का एक तरीका है। वैसे, मुझे लगता है कि हाइडेगर इस

मामले में सही हैं। मुझे लगता है कि आप किसी खास चीज़ के लिए पहले से तय बातों को ब्रैकेट में रखने की कोई भी कोशिश, ब्रैकेट में रखने की कोशिश , बहुत मुश्किल होने वाली है।

यह एक तरह का एब्स्ट्रैक्शन है, एब्स्ट्रैक्शन में हाइफ़न रिलेशनशिप के बारे में सोचना। लेकिन एब्स्ट्रैक्ट तरीके से सोचने का, एब्स्ट्रैक्ट आइडियाज़ का नेचर ही यह है कि यह हमेशा खास चीज़ों से शुरू होता है। और ऐसी खास चीज़ें उससे कहीं ज़्यादा बड़ी चीज़ का सिंबल बन जाती हैं।

तो इसमें जो मुश्किल है, वह एब्स्ट्रैक्ट सोच में है जिसमें कोई रेफरेंस पॉइंट नहीं होता, जो मतलब वाली सिंबॉलिक भाषा को मुमकिन बनाता है। खैर, हुसरल जो कर रहे हैं, उसके बजाय हाइडेगर जो करने का प्रपोज़ल दे रहे हैं, वह है चीज़ों के स्ट्रक्चर को बताने के इस फेनोमेनोलॉजिकल तरीके का इस्तेमाल करना, इसे कॉन्शियस अस्तित्व पर, इंसानी अस्तित्व पर, इंसानी अस्तित्व की फेनोमेनोलॉजी पर इस्तेमाल करना। यानी, हुसरल के तरीके में सिर्फ़ ब्रैकेटिंग ही नहीं, बल्कि ईडेटिक इंट्यूशन भी शामिल था।

ईडेटिक का संबंध आइडिया से है, जहाँ आपको याद होगा, आइडिया प्लेटो का शब्द था जो रूपों, आदर्शों, यूनिवर्सल, सार के लिए था। तो, ईडेटिक इंट्यूशन चेतना के यूनिवर्सल स्ट्रक्चर के उन यूनिवर्सल सार के बारे में तुरंत जागरूकता है। और हुसरल जो करना चाहते थे, वह यह बताना था कि कोई उस ईडेटिक इंट्यूशन में क्या पाता है, क्या देखता है, जैसे इंटेंशनैलिटी।

खैर, हाइडेगर जो करना चाहते हैं, वो सर्वज्ञता में अंतर्निहित चेतना की किसी सार्वभौमिक संरचना पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहते, बल्कि अस्तित्व की सार्वभौमिक संरचनाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं, जिन्हें अस्तित्ववाद कहा जाता है । अस्तित्ववाद । अब, वो जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वो वस्तुओं की श्रेणियों में अंतर करना है, वस्तुओं की श्रेणियों को मानव विषय के अस्तित्वगत गुणों से अलग करना है।

आइए देखें कि इस दुनिया में होने की यूनिवर्सल एग्ज़िस्टेंशियल खासियतें क्या हैं। एग्ज़िस्टेंशियल का मतलब है इस दुनिया में सब्जेक्ट की कंडीशन। तो हाइफ़न एक जानने वाला रिश्ता नहीं बनता, बल्कि उन सभी एग्ज़िस्टेंशियल क्वालिटीज़ के साथ रिश्ता बनाने वाला बन जाता है जो उससे जुड़ी हैं। अब, उसी समय, जब वह हुसरल से नाखुश है, तो उसे दूसरे एग्ज़िस्टेंशियलिस्ट से भी दिक्कतें हैं।

नीत्शे जैसे लोग। यहाँ तक कि जैस्पर्स भी। वह हर तरह के लोगों का ज़िक्र करता है।

वे जो कर रहे हैं, उसे वह बस अस्तित्व की व्याख्या कहते हैं। वे यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि हम कैसा महसूस करते हैं, हम अपने अस्तित्व को कैसे महसूस करते हैं। हमारे अस्तित्व की व्याख्या।

ओह, हो सकता है कि वे किसी असली अस्तित्व को सामने लाने की कोशिश कर रहे हों। अस्तित्व को समझाना और उसे सामने लाना। दूसरे शब्दों में, वे जो कर रहे हैं वह किसी भी पारंपरिक फिलॉसॉफिकल एक्टिविटी को छोड़ना है।

ग्रीक लोगों के समय से ही पारंपरिक फ़िलॉसफ़ी का संबंध होने से था। कैपिटल B. सिर्फ़ दुनिया में हमारे होने को साफ़ करना नहीं। इसलिए ग्रीक लोगों की दिलचस्पी पुरानी, बेसिक चीज़ों में थी।

अगर आप चाहें, तो सभी चीज़ों के आधार पर। आप समझे? चीज़ों के आधार पर। तो हाइडेगर जो करना चाहते हैं, वह यह है कि हमारे, ओह, इत्तेफ़ाक से, सभी चीज़ों के इस आधार को सीन के नाम से जाना जाता है।

खुद होना। मेरे लिए होने से अलग। खुद होना।

और हमारा होना, दुनिया में हमारा होना , डेसीन है। ठीक है? तो हाइडेगर जो चाहते हैं, वह डेसीन, दुनिया में हमारे होने का एक फेनोमेनोलॉजिकल डिस्क्रिप्शन करना है, यह देखने के लिए कि क्या होने का आधार, खुद होना, होने का आधार, आप देखिए, हमारे डेसीन में, दुनिया में हमारे होने में मौजूद है। क्या हम दुनिया में अपने होने की जांच करके होने के आधार के बारे में कुछ समझ, कुछ अवेयरनेस हासिल कर सकते हैं ? उदाहरण के लिए, उनके पास, चलिए देखते हैं , उनका एक पीस है जिसका नाम है 'मेटाफिजिक्स क्या है?' जो 1929 में पब्लिश हुआ था।

मेटाफ़िज़िक्स क्या है? जहाँ वह कहते हैं, बेशक, यह डेसीन के बजाय सेन, होने के बारे में है। और फिर वह ऐसे सवाल पूछते हैं जिनमें एग्ज़िस्टेंशियल मोमेंट्स होते हैं। कुछ न होने के बजाय कुछ क्यों है? अच्छा सवाल है।

कुछ न होने के बजाय कुछ क्यों है? और वह उस सवाल के एग्जिस्टेंशियल पल को पकड़ने की कोशिश करता है। जैसे कि आप किसी चट्टान के किनारे, एक गहरी खाई पर लटके हुए हों, और कुछ न होने के किनारे पर पूछ रहे हों, कुछ न होने के बजाय कुछ क्यों है? दूसरे शब्दों में, मैं कुछ न होने की कगार पर कैसे हो सकता हूँ ? क्या मैं कभी ज़िंदा रह सकता हूँ? आप समझे। तो एग्जिस्टेंशियल, क्या, डर, दहशत, तकलीफ़ से देखते हुए, यह पूछना कि यह क्या सामने लाता है।

और इसी तरह उनकी कुछ दूसरी रचनाओं में भी, इसी तरह की बातें हैं। लेकिन 1927 में छपी उनकी मुख्य रचना का नाम है 'बीइंग एंड टाइम'। ध्यान दें कि इसका शीर्षक कितना महत्वपूर्ण है।

आप देखिए, बीइंग और टाइम। तो टाइटल है Sein und Seint । अब बीइंग, हाँ, वह बीइंग के नेचर को समझना चाहता है।

समय, हमारे होने का समय, इस दुनिया में हमारे होश में होने का समय, यही वो चीज़ है जो हमारे होने के गुणों को सामने ला सकती है और उन्हें जगा सकती है। और वैसे भी, कांटियन परंपरा में, यह समय ही है जो किसी भी चीज़ के हमारे होश में होने को बनाता है। तो फिर इसमें क्या पता चलता है? अब, जब मैं कहता हूँ कि हमारे होने में, उसमें क्या पता चलता है, तो वह यह नहीं कह रहा है कि हम इससे क्या अंदाज़ा लगा सकते हैं, डेसकार्टेस स्टाइल में।

देखिए, ऐसा नहीं है कि वह मेंटल रिप्रेजेंटेशन लेकर कोई कॉज़ल इनफेरेंस निकालने की कोशिश कर रहे हैं। नहीं, लेकिन क्या हमें अपने होने की चेतना में होने के आधार का सीधा अवेयरनेस है? जब आप सबसे निचले लेवल पर पहुँच जाते हैं, तो क्या वहाँ कुछ होता है? वह यही पूछ रहे हैं। खैर, तब उनका बड़ा प्रोजेक्ट 'बीइंग एंड टाइम' में डिज़ाइन की एक फेनोमेनोलॉजी थी।

एग्जिस्टेंशियलिया , चेतना के यूनिवर्सल स्ट्रक्चर, इस दुनिया में होने के बारे में बताना था । इसके यूनिवर्सल पहलू, स्ट्रक्चर को दिखाने वाले। उन्होंने प्रोजेक्ट का सिर्फ़ आधा हिस्सा, पहला हिस्सा ही पूरा किया, जो समय और हमारे होने, डिज़ाइन से जुड़ा है ।

पार्ट टू, जो टेम्पोरैलिटी और खुद होने से जुड़ा था, ज़ीन कभी पूरा नहीं कर पाया। क्यों नहीं? खैर, ऐसा आमतौर पर इसलिए कहा जाता है क्योंकि उसे यकीन हो गया था कि यह इस्तेमाल करने का तरीका नहीं है, और इसलिए यह सिर्फ़ आधा ही हुआ था। सवाल कुछ ऐसा लगता है।

अगर यह भी मान लिया जाए कि हमारे होने जैसी कोई चीज़ हमारे कॉन्शस होने में ज़ाहिर होती है, तो हम उसका मतलब कैसे निकालेंगे? हम उसे कैसे समझेंगे? समय दुनिया में हमारे होने का स्ट्रक्चर हो सकता है, लेकिन क्या यह खुद होने का स्ट्रक्चर है? लेकिन, क्या हम जानेंगे? आप समझे? और इसलिए उन्हें लगता है कि हमें खुद होने के लिए ज़्यादा सीधा नज़रिया अपनाने की ज़रूरत है। और यहीं पर उन्होंने ज़्यादा एग्ज़िस्टेंशियल तरीकों की ओर रुख किया, जैसे कि कुछ न होने के बजाय कुछ क्यों है, या सभी प्री-साइंटिफिक और प्री-फिलॉसॉफिकल वोकैबुलरी में वापस जाना, शुरुआती ग्रीक में, फिलॉसफी के आने से पहले, यह देखने के लिए कि क्या शुरुआती यूनानियों की भाषा में कुछ ऐसा है जो खुद को दिखाता है। और वह हर तरह की दिलचस्प एटिमोलॉजी करते हैं।

उस तक पहुँचने की कोशिश कर रहा हूँ। उदाहरण के लिए, वह ' ऑन द एसेंस ऑफ़ ट्रुथ' नाम के एक छोटे से निबंध में खुद से पूछता है कि सच क्या है। और जिस एटिमोलॉजी का वह इस्तेमाल करता है, वह सच के पारंपरिक नज़रिए को खारिज करती है, जैसे कि सोच और चीज़ के बीच का मेल, या जैसा कि एक्विनास ने कहा, सोच को चीज़ के बराबर मानना, उसे खारिज करती है। और एटिमोलॉजी के हिसाब से ग्रीक शब्द एलेथिया को देखता है , कहता है कि एक अल्फा प्रिवेटिव है जो मना करता है, और यहाँ एक पत्थर या चट्टान के लिए शब्द है।

तो सच का मतलब है कि कोई पत्थर नहीं है? हाँ, इसका मतलब है कि चट्टान, सारे पत्थर हटा दिए गए हैं, और वहाँ आप देख सकते हैं कि उनके नीचे क्या है। तो, सच किसी चीज़ का नेचर है जो खुद को दिखाता है। कहने का मतलब है, जो दिखता है वह वह चीज़ है जो आपके अपने एग्ज़िस्टेंशियल मोमेंट में आपको दिखती है।

यह सच है। और दिलचस्प बात यह है कि यह हमारी कहावत, 'सच्चाई का पल' से कैसे मेल खाता है। 'सच्चाई का पल'।

देखिए, जिसमें आपको यह बताने के लिए मजबूर किया गया था कि आप किस तरह के इंसान हैं, आपने उस सच के पल में खुद को यह बताया। खैर, मैं होने और समय पर वापस आता हूँ, और

वहाँ उन्होंने जो कुछ किया है, उसके बारे में कुछ कमेंट्स, जो मुझे लगता है कि खास तौर पर ज़रूरी हैं। एक बात जो तुरंत साफ़ हो जाती है, वह यह है कि डेसीन, दुनिया में किसी के होने, किसी के होश में होने को बताने की कोशिश में, वह ज़रूरी तौर पर 'मैं' शब्द का इस्तेमाल करते हैं। हाँ, जैसा कि हममें से कोई भी करेगा, वह एक फर्स्ट पर्सन हैं।

या शायद 'तुम' शब्द। लेकिन वह 'मैं' शब्द का इस्तेमाल किसी खास इंसान के मतलब में नहीं कर रहा है, बल्कि 'मैं' को यूनिवर्सल माना गया है। यानी, वह 'मैं', यानी हाइफ़न के यूनिवर्सल पहलुओं को ढूंढ रहा है।

वहां यूनिवर्सलिटी है, कोई खासियत नहीं, बल्कि यूनिवर्सलिटी। मैं यूनिवर्सल हूं । अब, आप कहते हैं कि यह अजीब है।

अगर आपने हेगेल को पढ़ा है तो नहीं। क्योंकि हेगेल में, आप पाते हैं कि मैं, यानी व्यक्ति, यूनिवर्सल और खास का एक मेल है । याद रखें, उनके लॉजिक में, आप खास से आगे बढ़ते हैं, नहीं , आप यूनिवर्सल से खास और फिर व्यक्ति की ओर बढ़ते हैं।

तो व्यक्ति ठोस यूनिवर्सल है, जिसे हेगेल ने ठोस यूनिवर्सल कहा था। यूनिवर्सल संभावनाएं, यूनिवर्सल खूबियां व्यक्ति में ठोस रूप में। तो मैं यूनिवर्सल है ।

अब, मुझे लगता है कि यह एक बहुत ज़रूरी बात है। क्योंकि अगर आप रिलेटिविज़्म, प्लूरलिज़्म, वगैरह के जवाब में यूनिवर्सल पॉइंट ऑफ़ रेफरेंस ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं, तो वह यह कह रहे हैं कि भले ही आप किसी व्यक्ति की जांच करें, हर व्यक्ति में कुछ यूनिवर्सल होता है। नहीं, यूनिवर्सल सिर्फ़ खास चीज़ों के बारे में एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन नहीं है।

यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप खास बातों के कलेक्शन से निकालते हैं। यह कुछ ऐसा है जो खास बातों के अंदर ही दिखता है। ताकि आप कह सकें कि एक सोच के ढांचे की कुछ यूनिवर्सल इंसानी खूबियां होती हैं, जो लोगों में खास तरीकों से सामने आती हैं।

तो यूनिवर्सल और इंडिविजुअल अलग-अलग चीज़ें नहीं हैं। यूनिवर्सल इंडिविजुअल में दिखता है, इसीलिए दुनिया में हमारे होने के अंदर होना दिख सकता है। क्योंकि हमारा होना खुद होने का एक खास रूप है।

। एक ठोस यूनिवर्सल है । वह इस तरह की दुनिया में एक तरह का कोरा फैक्ट, मामूली, बस एक चीज़ होने के अनुभव को बताने के लिए फैक्टिसिटी शब्द का इस्तेमाल करते हैं। वह हाथ के लिए he और किसी चीज़ के स्टेटस को बताने के लिए zayn शब्द का इस्तेमाल करते हैं , जो बस एक इंस्ट्रूमेंट है, दूसरों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक टूल है।

एक हाथ और ज़ैन का मतलब है हाथ में होना, कुछ ऐसा जो हाथ में हो। बस इस्तेमाल करने के लिए। और ज़ाहिर है, इंसानी वजूद के लिए, वे बहुत ही नकली तरह के वजूद हैं।

वह इंसानी वजूद में मौजूद संभावनाओं के लिए एग्जिस्टेंशियलिटी शब्द का इस्तेमाल करते हैं। इंसानी वजूद में मौजूद संभावनाएं । इंसानी वजूद में मौजूद होने की आज़ादी।

वह इंसानी ज़िंदगी में मौजूद संभावनाओं को खोने के अनुभव के बारे में बात करने के लिए 'जब्त करना' और 'पतन' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। वह इन शब्दों में 'विवेक' की बात करते हैं, और 'मौत तक जीना' शब्द अहम है। जैसे कि हर चेतना में कोई इरादा होता है, तो हमारे अपने होने की चेतना, हमारी अपनी ज़िंदगी की चेतना, दूसरी चीज़ों के साथ-साथ, मौत तक जीने की चेतना भी है।

हम सबके लिए समय खत्म हो रहा है। वहां मौजूद होने की खूबी, मौत तक रहना। वह मित्ज़ायन को एक और ऐसी ही यूनिवर्सल खूबी के तौर पर बताते हैं।

मित्ज़ायन का मतलब है साथ होना, साथ होना। हाँ, यह अकेले होने से पहले की बात है। हम असल में रिलेशनल जीव हैं।

हमारा सचेत अस्तित्व हमेशा जुड़ा हुआ है; हमारी पहचान हमेशा दूसरों से जुड़ी हुई है। मित्ज़ेन । लेकिन खास बात जो ध्यान देने लायक हो सकती है , वह यह है कि वह समझ और भाषा को कैसे देखते हैं।

क्योंकि यहाँ आपको वह पोस्टमॉडर्न थीम फिर से देखने को मिलती है। समझ एक तरीका है जिससे हम अपने डिज़ाइन का मतलब चीज़ों पर प्रोजेक्ट करते हैं। ताकि सब्जेक्ट-ऑब्जेक्ट रिलेशनशिप में।

यह कहना कि मैं किसी चीज़ को समझता हूँ, इसका मतलब है कि मैं उसे अपनी इमेज में बना रहा हूँ। मैं उसे अपने लिए एक चीज़ बना रहा हूँ। मैं उस पर अपना मतलब प्रोजेक्ट करता हूँ।

और इसी वजह से, भाषा को जानना और उसका इस्तेमाल करना, दोनों ही दुनिया में रहने के तरीके हैं। लेकिन, कोई पूछता है कि क्या आप ऐसी दुनिया में रह सकते हैं, ज़िंदा रह सकते हैं, मौजूद रह सकते हैं? और यह सब उस पर मतलब डालकर।

आपका मतलब। और चीज़ों को ऐसे नाम देकर जहाँ नाम से वह मतलब मिले जो आप चाहते हैं, आप देखिए। और उसके बारे में इस तरह से बात करके जो उस चीज़ के बारे में बताने के बजाय आपके बारे में बताने के लिए ज़्यादा ज़रूरी हो।

तो फिर सच की खोज क्या है? सच की खोज, होने के खुलासे की खोज है। कोई पत्थर नहीं। होने के खुलासे की खोज।

तो किसी भी दूसरी चीज़ के बारे में सच की तलाश, बस उस चीज़ की तलाश में शामिल होने का एक इनडायरेक्ट तरीका है जो मेरे होने में खुद को दिखाती है। आप देखिए, मैं ऐसी दुनिया में कैसे रह सकता हूँ। और इसलिए, यह मेरी भाषा के इस्तेमाल वगैरह में खुद को दिखाता है।

तो उनका नज़रिया पूरी तरह से पोस्ट-मॉडर्न है। और यही बात हाइडेगर में भी है, जिसे गैडामर ने अपनी किताब ट्रुथ एंड मेथड में उठाया है , जो फेनोमेनोलॉजिकल हेर्मेनेयुटिक्स का क्लासिक है जिसके बारे में हम बाद में बात करेंगे। खैर, सवाल? कमेंट? आपको जॉन पॉल सार्त्र में भी ज्ञान के बारे में लगभग यही नज़रिया मिलेगा।

आप जो किताब पढ़ रहे हैं, उसमें नहीं, बल्कि उनके बड़े काम में, जिसे हाइडेगर के पैरेलल, Being and Time नहीं, बल्कि Being and Nothingness कहा जाता है। Being and Nothingness। ठीक है, अब अगली बार मैं सार्त्र के बारे में बात करना चाहता हूँ।

क्या आप सार्त्र की किताब, ट्रांसेंडेंस ऑफ़ द ईगो, अपने साथ लाएँगे? उम्मीद है, आपने इसे पहली बार पढ़ा होगा। मैं कहता हूँ पहला वाला, क्योंकि मुझे लगता है कि इसे समझने के लिए आपको कुछ और करने होंगे।